सितम्बर २०१६
कीमत ₹ १२/-
दादा भगवान परिवार का
अक्रम एक्सप्रेस
इरिटेशन... एक दुर्बलता

अक्रम एक्सप्रेस

इरिटेशन... एक दुर्बलता

संपादकीय

बालमित्रों,

हमारे लिए इरिटेट हो जाना तो सामान्य बात हो गई है। बात-बात में हम इरिटेट हो जाते हैं। क्या हमें अपनी इस कमज़ोरी का और इसकी वजह से होनेवाले नुकसान का अंदाज़ा है?

परम पूज्य दादाश्री ने इस विषय पर सुंदर समझ दी है। जिससे हम इसमें से बाहर निकलने का पुरुषार्थ कर सकते हैं।

तो आइए, इस अंक को पढ़कर हम इस कमज़ोरी को दूर करने में समर्थ बनें।

- डिम्पल भाई मेहता

संपादक :
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक : ६
अखंड क्रमांक : ४२
सितम्बर २०१६

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

इरिटेशन यानी गुस्से के शुरू होने का स्टेज। इरिटेट होने का कारण क्या है? हमें जो नापसंद हो ऐसा कुछ आए तो हम इरिटेट हो जाते हैं। नापसंद यानी क्या? हमारे व्यू पोइन्ट से अलग हो, हमारा किया हुआ सामनेवाले को अच्छा न लगे और उसका किया हुआ हमें अच्छा न लगे इसलिए इरिटेट हो जाते हैं। दूसरा, हम किसी से कुछ कह रहे हों और सामनेवाला कुछ अलग ही समझे तब भी इरिटेट हो जाते हैं।

सामनेवाला व्यक्ति नहीं चाहता कि मैं किसी को इरिटेट करूँ। लेकिन वह जहाँ भी जाता है वहाँ इरिटेट किए बिना नहीं रहता। अब, वह है तो संपूर्ण निर्दोष, उसे तो यह पता भी नहीं है कि मुझसे ऐसा कुछ हो जाता है, जिससे सामनेवाला इरिटेट हो जाता है। लेकिन, वह पास में आकर यों ही खड़ा हो जाए फिर भी हम इरिटेट हो जाते हैं।

छोटी-छोटी बातों में हम बहुत इरिटेट हो जाया करते हैं। इरिटेशन आनंद में रहने नहीं देता। जो चीज़ हर रोज़ रिपीट होती हो और उसके लिए हम इरिटेट होते हों तो यह हमारी ही गलती है। वहाँ हमें खुद ही ऐसा बन जाना चाहिए कि हमें इरिटेशन न हो। चाहे कुछ भी हो लेकिन हमें इरिटेट नहीं होना चाहिए। अगर किसी समझ से हम अपने इरिटेशन का अंत ला दे, तो हम जीत जाएँगे। वहाँ हमें तय करना चाहिए कि मुझे जो इरिटेशन होता है वह मेरी विकनेस है, सामनेवाले की नहीं और मुझे इसमें से निकलना है। मुझे इरिटेशन नहीं हो और मैं सहज रह सकूँ ऐसा बन जाना है।

प्रश्नकर्ता : यदि सामनेवाला हमसे इरिटेट हो तो?

नीरू माँ : तो हमें प्रतिक्रमण करना चाहिए। यदि पता चल जाए कि सामनेवाला हमसे इरिटेट हो जाता है, तो यह भी पता लगाना पड़ेगा कि वह हमारी किस बात से इरिटेट होता है।

यह तो नई ही बात

जो जितना ज्यादा सेन्सिटिव होता है, वह उतना ही ज्यादा इरिटेट होता है।

सामनेवाले को सुधारने से अपना इरिटेशन चला नहीं जाएगा। उसे निर्दोष देखेंगे और उसके अंदर बैठे हुए भगवान के दर्शन करेंगे, तो अपना इरिटेशन खतम होगा।

किसी को इरिटेट करने से आनंद आए, यह महा पाशवी आनंद कहलाता है। हमें अगला जन्म जानवर का लेना पड़ेगा।

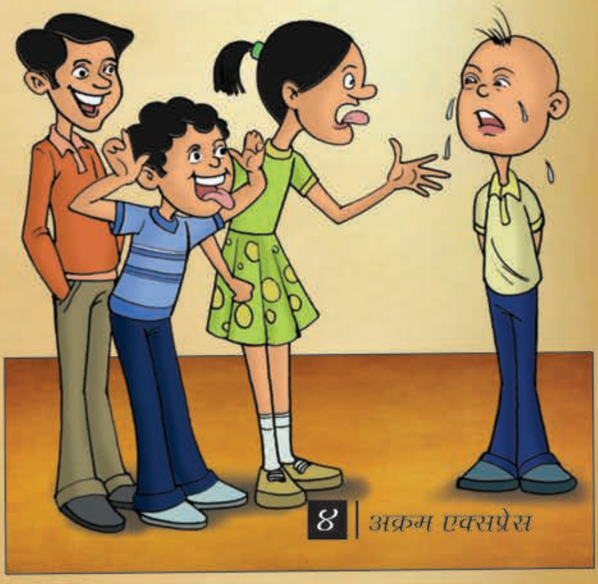

सच्चा छत्र कौन सा?

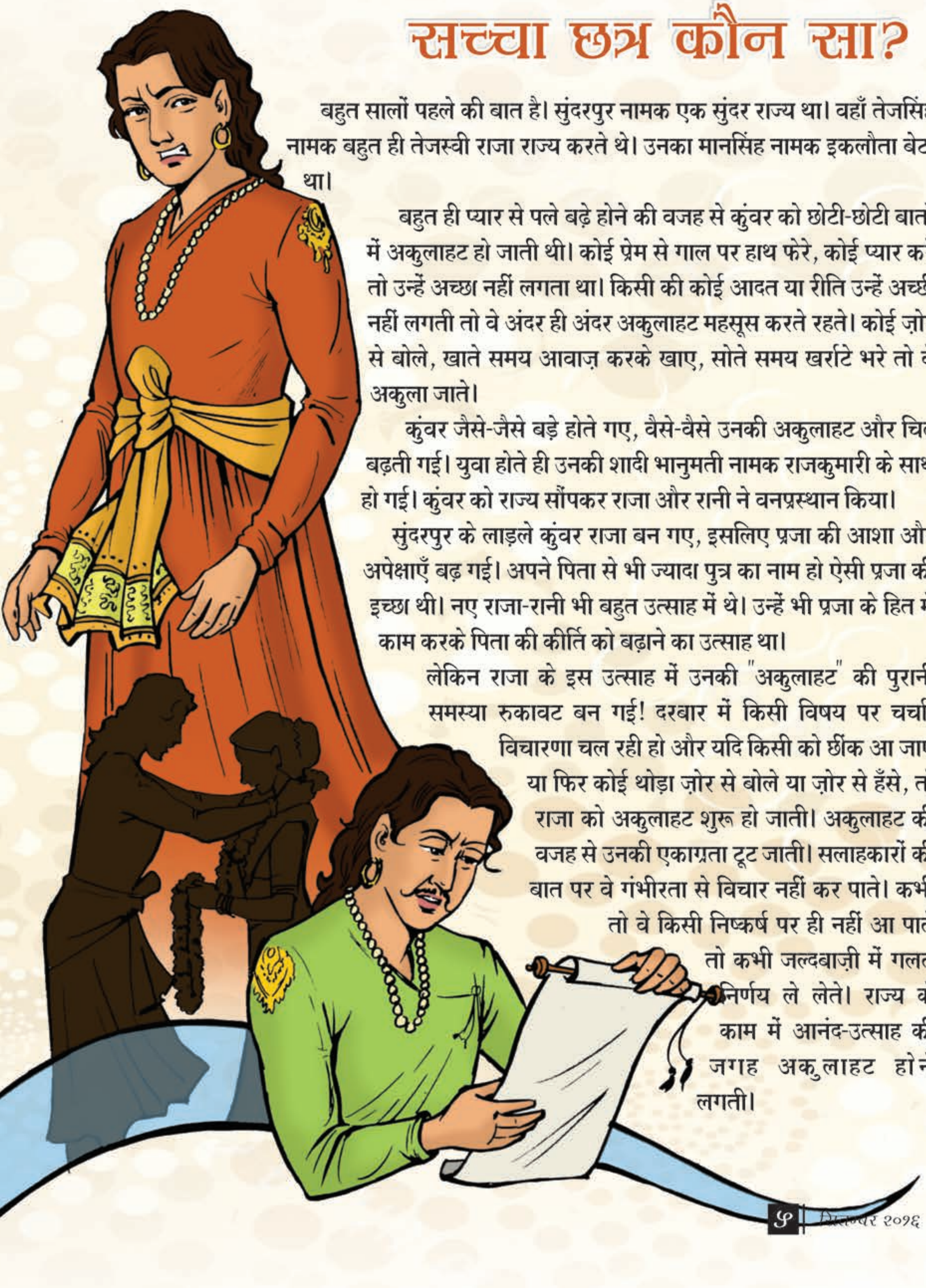

बहुत सालों पहले की बात है। सुंदरपुर नामक एक सुंदर राज्य था। वहाँ तेजसिंह नामक बहुत ही तेजस्वी राजा राज्य करते थे। उनका मानसिंह नामक इकलौता बेटा था।

बहुत ही प्यार से पले बढ़े होने की वजह से कुंवर को छोटी-छोटी बातों में अकुलाहट हो जाती थी। कोई प्रेम से गाल पर हाथ फेरे, कोई प्यार करे तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था। किसी की कोई आदत या रीति उन्हें अच्छी नहीं लगती तो वे अंदर ही अंदर अकुलाहट महसूस करते रहते। कोई ज़ोर से बोले, खाते समय आवाज़ करके खाए, सोते समय खर्राटे भरे तो वे अकुला जाते।

कुंवर जैसे-जैसे बड़े होते गए, वैसे-वैसे उनकी अकुलाहट और चिढ़ बढ़ती गई। युवा होते ही उनकी शादी भानुमती नामक राजकुमारी के साथ हो गई। कुंवर को राज्य सौंपकर राजा और रानी ने वनप्रस्थान किया।

सुंदरपुर के लाड़ले कुंवर राजा बन गए, इसलिए प्रजा की आशा और अपेक्षाएँ बढ़ गई। अपने पिता से भी ज्यादा पुत्र का नाम हो ऐसी प्रजा की इच्छा थी। नए राजा-रानी भी बहुत उत्साह में थे। उन्हें भी प्रजा के हित में काम करके पिता की कीर्ति को बढ़ाने का उत्साह था।

लेकिन राजा के इस उत्साह में उनकी "अकुलाहट" की पुरानी समस्या रुकावट बन गई! दरबार में किसी विषय पर चर्चा-विचारणा चल रही हो और यदि किसी को छींक आ जाए या फिर कोई थोड़ा ज़ोर से बोले या ज़ोर से हँसे, तो राजा को अकुलाहट शुरू हो जाती। अकुलाहट की वजह से उनकी एकाग्रता टूट जाती। सलाहकारों की बात पर वे गंभीरता से विचार नहीं कर पाते। कभी तो वे किसी निष्कर्ष पर ही नहीं आ पाते तो कभी जल्दबाज़ी में गलत निर्णय ले लेते। राज्य के काम में आनंद-उत्साह की जगह अकुलाहट होने लगती।

एक दिन पड़ोस के राजा मित्रता करने के लिए अचानक आ गए। उनका इस तरह पहले से बताए बिना आना, राजा मानसिंह को अच्छा नहीं लगा। लेकिन राजनीति के अनुसार उन्होंने उनका आदर-सत्कार किया। भोजन के समय, मेहमान राजा का आवाज़ करके खाना खाने और खाते-खाते ज़ोर-ज़ोर से हँसने की आदत से राजा मानसिंह बेचैन हो गए। और खाते-खाते ही खड़े हो गए। राजा मानसिंह के ऐसे व्यवहार से पड़ोसी राजा बहुत नाराज़ हो गए। राज्य में वापस लौटकर उन्होंने मानसिंह को मित्रता तोड़ने का संदेश भेज दिया।

और इस तरह, राज्य के विकास के काम, लोक हित के काम, सुधरने के बजाय बिगड़ने लगे। प्रजा में असंतोष और निराशा फैलने लगी। आसपास के राज्यों में अपने राज्य की प्रतिष्ठा कम होती हुई देखकर राजा मानसिंह बेचैन हो गए थे। राजा को इस तरह बेचैन देखकर रानी भानुमती को उनकी फिकर होने लगी। राजा की बेचैनी का कारण और उसका निवारण ढूँढ निकालने का उन्होंने तय किया।

“ रानी को ऐसी स्थिति में देखकर राजा चिंतित हो गए। उस दिन राजा-रानी के साथ कोई सिपाही नहीं थे। ”

"आज मैं पूरा दिन आपके साथ बिता सकती हूँ?" रानी ने राजा से विनती की।

राजा को रानी के प्रति बहुत मान और प्रेम था। राजा को लगा कि रानी गुणवान और बुद्धिशाली तो हैं ही, यदि वे राज्य के कार्य में साथ रहेंगी तो ज़रूर अच्छे परिणाम आएँगे। ऐसा सोचकर राजा ने उन्हें अनुमति दे दी। उस दिन रानी ने राजा का ध्यान से अवलोकन किया। उन्हें राजा की अकुलाहट के बारे में पता चला।

रानी भानुमति बहुत ही चतुर थीं। राजा की इस अकुलाहट को दूर करने के लिए उन्होंने एक योजना बनाई। दूसरे दिन वे राजा को वन में घुमाने ले गईं। कुछ समय आनंद में बीता, फिर तो राजा पक्षियों के कलरव से बेचैन होने लगे। रास्ते में उड़ती धूल की वजह से उन्हें अकुलाहट होने लगी।

"रानी, अब हम वापस चलें?" राजा ने रानी से निवेदन किया।

रानी को राजा की बेचैनी का पता चल गया था। लेकिन उन्होंने राजा से थोड़ा और रुकने का आग्रह किया। सूरज अब सिर पर आ गया था। गरमी की वजह से रानी की चमड़ी पर खराब असर होने लगा। गरमी से जलन होने की वजह से रानी की चमड़ी लाल हो गई और शरीर पर छाले पड़ गए।

रानी ने कहा, "मुझे बहुत अकुलाहट हो रही है। तेज धूप सहन नहीं हो रही और पूरे शरीर में जलन हो रही है।"

रानी को ऐसी स्थिति में देखकर राजा चिंतित हो गए। उस दिन राजा-रानी के साथ कोई सिपाही नहीं थे। और वे महल से बहुत दूर आ गए थे। एक क्षण की भी देर किए बिना राजा ने रानी को एक पेड़ के नीचे बिठया। पीली मिट्टी का लेप बनाकर रानी के चेहरे और पैर में लगाया। आसपास के बड़े पत्ते, बेल और डालियों की मदद से एक छत्र जैसा बनाकर रानी के सिर के ऊपर रखा। रानी को थोड़ा अच्छा लगा।

धीरे से रानी ने राजा से पूछा, "आपने ऐसा कैसे किया? मिट्टी की चिढ़ भूलकर अपने हाथ से मुझे मिट्टी लगाई! पक्षियों की आवाज़ से बोर हुए बिना एकाग्रता से मेरे लिए छत्र बनाया!"

राजा ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में रानी को उत्तर दिया, "आपकी कमज़ोरी आपको पहले से ही पता थी। फिर भी गरमी में यहाँ रुकने की ज़िद क्यों की? पहले अपनी कमज़ोरी दूर करके खुद को मजबूत करो और फिर घूमने जाने की योजना बनाओ।"

कुछ पलों के लिए उन दोनों के बीच चुप्पी छा गई। फिर थोड़ा शांत होकर राजा बोले, "आपको जलन से राहत देने के लिए मैं सूर्य की गरमी को तो रोक नहीं सकता लेकिन आपको रक्षण देने के लिए छत्र और ठंडक देने के लिए मिट्टी का लेप तो बना ही सकता हूँ न? मेरी अकुलाहट और बोरियत से अनेक गुना ज्यादा मेरे मन में आपके प्रति स्नेह है।"

रानी अपने कक्ष में आराम कर रही थी, तब राजा उनकी खबर पूछने आए, "अब आपको कैसा लग रहा है?"

महल पहुँचने के बाद, वैद्यों ने रानी का इलाज किया। रानी अपने कक्ष में आराम कर रही थीं, तब राजा उनकी खबर पूछने आए, "अब आपको कैसा लग रहा है?"

रानी हँसकर बोलीं, "मैं तो ठीक हो गई लेकिन आप कैसे हैं?"

राजा को आश्चर्य हुआ, "मुझे?"

रानी ने कहा, "हाँ, जो सलाह आपने मुझे दी, उसी बात को समझाने के लिए मैं आपको घूमाने ले गई थी और धूप में रुकने का आग्रह किया था। किसी की आदत से अकुलाहट होना यह तो हमारी ही कमज़ोरी कहलाएगी। किसी व्यक्ति या चीज़ का इरादा आपको अकुलाहट कराने का नहीं होता। जिस तरह सूर्य की गरमी रोकी नहीं जा सकती लेकिन उससे बचने के लिए छत्र बना सकते हैं, उसी तरह व्यक्ति की आदत हम बदल नहीं सकते लेकिन यदि व्यक्ति के प्रति अपनी दृष्टि बदल दें, तो उसकी आदतें हमें असर नहीं कर पाएगी।"

थोड़ी देर रुककर रानी ने कहा, "मेरे प्रति स्नेह की वजह से आपने अपनी अकुलाहट भूलकर मेरा रक्षण किया। उसी तरह प्रजा भी आपके स्नेह की हकदार है। यदि आप अपने हर एक व्यवहार में उस व्यक्ति के प्रति स्नेह को ध्यान में रखेंगे तो कमज़ोरी जीती जा सकती है।"

रानी की बात राजा ने दिल से स्वीकारी और अपनी कमज़ोरियों को जीतने का निर्णय किया।

उसके बाद राजा ने अपना ध्यान राज्य के कार्यों पर केन्द्रित किया। जब भी किसी की आदत से उन्हें अकुलाहट होती, तब वे रानी की सीख को याद करके, उसके अनुसार व्यवहार करते। धीरे-धीरे उनकी सारी चिढ़ और अकुलाहट गायब हो गई।

प्रजा को भी राजा के काम से सुख और संतोष मिला। राजा की सभी जगह वाह-वाह हुई और उन्होंने खाया-पीया और राज किया....!!!

कायमी आनंद

वृद्धाश्रम में, लन्च टेबल पर सभी के साथ खाना खाते-खाते, रोनक अचानक रुक गया, उसकी मम्मी को आश्चर्य हुआ

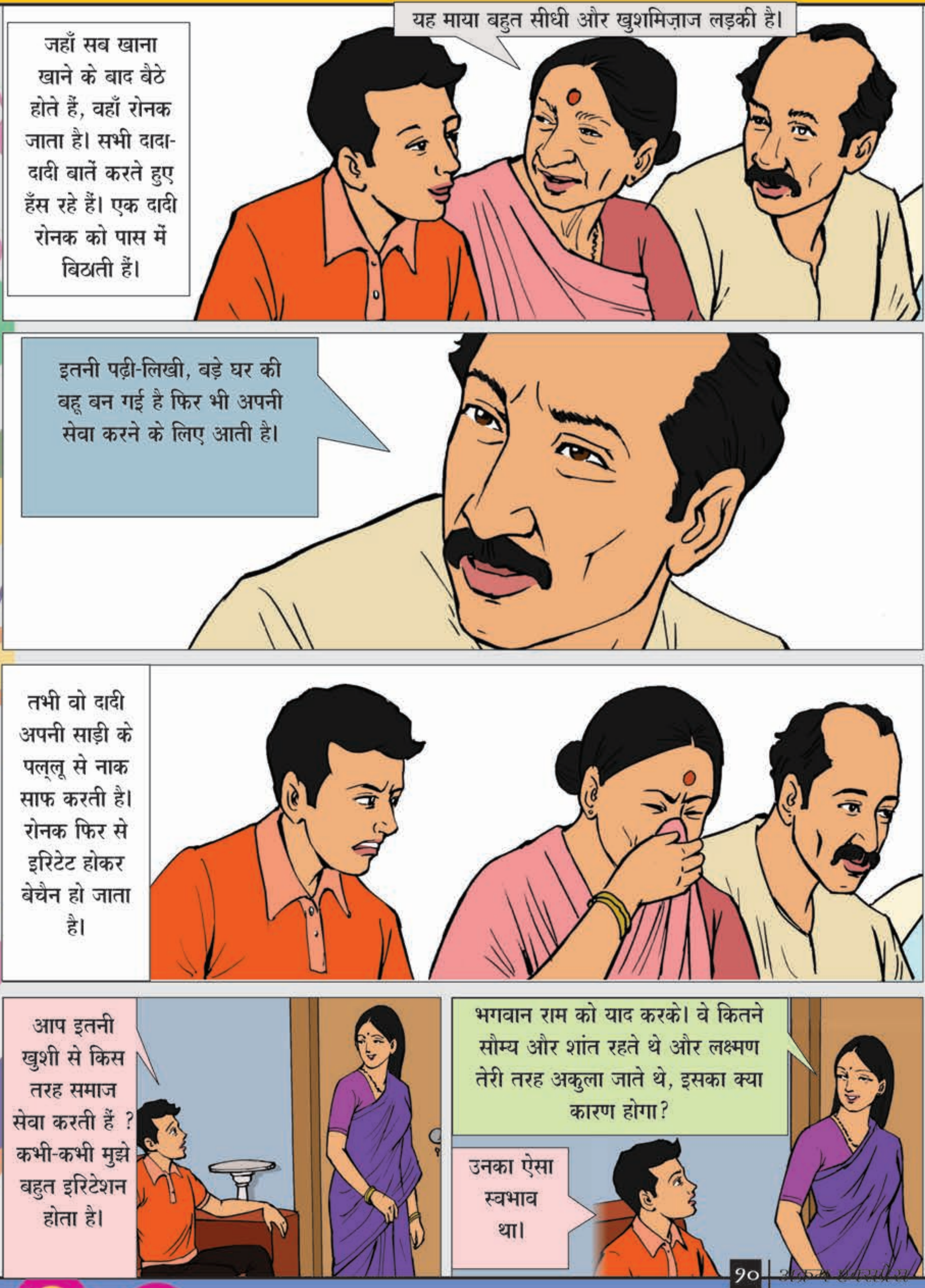
जहाँ सब खाना खाने के बाद बैठे होते हैं, वहाँ रोनक जाता है। सभी दादा-दादी बातें करते हुए हँस रहे हैं। एक दादी रोनक को पास में बिठाती हैं।
यह माया बहुत सीधी और खुशमिज़ाज लड़की है।
इतनी पढ़ी-लिखी, बड़े घर की बहू बन गई है फिर भी अपनी सेवा करने के लिए आती है।
तभी वो दादी अपनी साड़ी के पल्लू से नाक साफ करती है। रोनक फिर से इरिटेट होकर बेचैन हो जाता है।
आप इतनी खुशी से किस तरह समाज सेवा करती हैं ? कभी-कभी मुझे बहुत इरिटेशन होता है।
भगवान राम को याद करके। वे कितने सौम्य और शांत रहते थे और लक्ष्मण तेरी तरह अकुला जाते थे, इसका क्या कारण होगा?
उनका ऐसा स्वभाव था।

ठीक है, लेकिन उनके कायमी आनंद का एक कारण यह था कि वे कभी अकुलाते नहीं थे। अकुलाना गुस्से का ही एक छोटा रूप है, वह बढ़कर गुस्से के रूप में बाहर आता है।
तुझे पता है न कि शबरी के झूठे बेर उन्होंने खुशी-खुशी खाए थे?
हाँ और लक्ष्मण ने पीछे फेंक दिए थे।
एक्ज़ेक्टली, लक्ष्मण को यह देखकर अकुलाहट हुई थी, इसलिए उन्होंने फेंक दिए।
मम्मी, तो श्री राम को क्यों अकुलाहट नहीं हुई?
श्री राम को उसमें शबरी की भक्ति दिखी और लक्ष्मण को सिर्फ एक्शन ही दिखाई दिया, उसके पीछे का भाव नहीं।
हं...
जैसे दादा-दादी की तू सिर्फ एक्शन ही देखता है, उनकी परिस्थिति या भाव नहीं देखता।
सभी दादा-दादी कितने प्रेम करनेवाले हैं। तू वहाँ उनके कमरे में जूते पहनकर जाता है, उनके पलंग पर उछलकूद करता है लेकिन उन्हें किसी तरह की चिढ़ नहीं होती है, इसलिए वे अकुलाते नहीं है।

इस तरह तू भी किसी भी तरह का काम खुशी-खुशी कर सकेगा।
आपकी तरह?
हाँ।
तो मैं आज से सामनेवाले की परिस्थिति और भाव समझने की कोशिश करूँगा। जिससे इरिटेट न हो जाऊँ।
फिर तू भी हमेशा हँसता ही रहेगा।
श्री राम की तरह?
हाँ, मेरे राम।
और रोनक मम्मी से लिपट गया।

भारत के सर्व श्रेष्ठ क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर का नाम किसे नहीं पता? सचिन, क्रिकेट के धुरंधर बल्लेबाज़ और ऑल राउन्डर की तरह विश्वभर में प्रसिद्ध हैं।

पूरी क्रिकेट कारकिर्दी में सिर्फ एक ही बार वे एक टेस्ट मैच में स्टम्प आउट हुए थे!
२००२ की बात है। बेंगलूर में इंग्लेन्ड के साथ भारत का टेस्ट मैच चल रहा था। सचिन ने तो शुरुआत में ज़ोरदार बल्लेबाज़ी करके पचास रन बना लिए थे। उनकी ऐसी ज़बरदस्त बल्लेबाज़ी से इंग्लेन्ड की टीम को पता चल गया था कि किसी भी तरह की व्यूह रचना से या गेंदबाज़ी से सचिन को आउट करना मुश्किल है।

जीवंत उदाहरण

अकुलाहट अच्छे भले को गिरा देती है...

लेकिन इंग्लेन्ड के कप्तान ने टीम के साथ तय किया कि यदि सचिन को आउट नहीं किया जा सकता तो उसे ज्यादा रन भी नहीं बनाने देने हैं। सचिन तेंदुलकर सेन्चुरी पूरी करने ही वाले थे। वे ठीक से खेल नहीं पाए इसलिए इंग्लेन्ड के बोलरों ने पैर के पास बोलिंग करना शुरू कर दिया। सचिन को अकुलाहट होने लगी।

ऐसा करते-करते करीब एक-डेढ़ घंटा निकल गया। अब तेंदुलकर अपनी सेन्चुरी से सिर्फ दस रन ही दूर थे। ऐशली जाइल - इंग्लेन्ड के स्पिन बोलर, गेंदबाज़ी कर रहे थे। सभी प्रेक्षक, इन्डिया की टीम और दुनियाभर में तेंदुलकर के प्रशंसक उनकी सेन्चुरी पूरी होने का इंतज़ार कर रहे थे। नकारात्मक गेंजबाज़ी चालू ही थी। ऐशली जाइल बार-बार सभी गेंदे पैर के पीछे के स्टम्प के बाहर ही डाल रहे थे।

संपूर्ण खेलदिली बगैर की गेंदबाज़ी से सचिन की अकुलाहट इतनी बढ़ गई कि वे आगे बढ़कर सिक्सर मारने गए और... विकेट किपर ने सतर्कता से उन्हें स्टम्प आउट कर दिया। गेम फिर से इंग्लेन्ड के पक्ष में हो गई।

तो देखा मित्रों, अकुलाहट कितनी भारी पड़ती है? समझदार व्यक्ति की भी समझ चली जाती है। इसलिए, निश्चय करो कि अब हम कभी भी किसी भी बात से नहीं अकुलाएँगे।

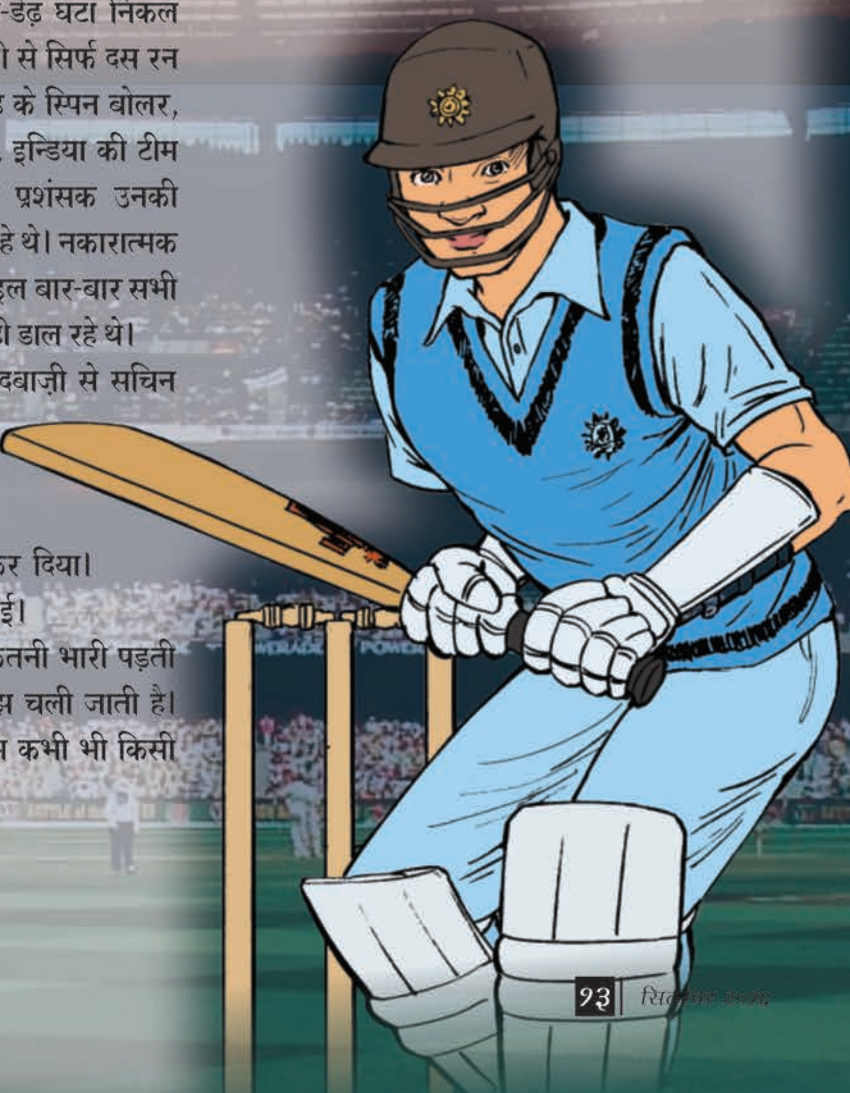

चलो खेलें...

१.

दिए गए बोक्स में २०१६ कितनी बार है?
उसे गिनिए...

२.

दी गई आकृति में कितने हार्ट शेप छिपे हैं? उसे ढूँढिए...

३. दोनों खरगोश को रास्ता ढूँढने में मदद कीजिए।

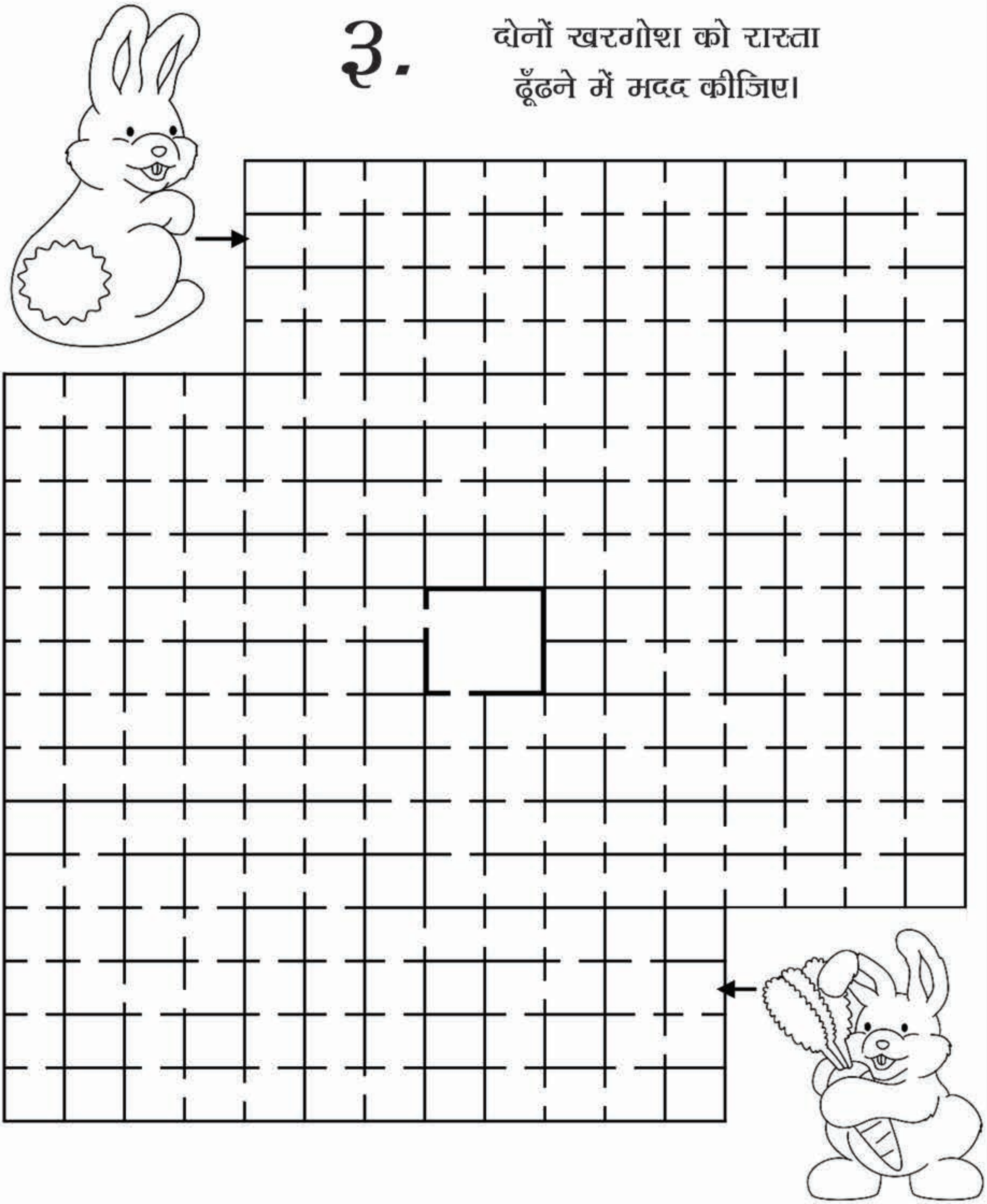

ऐतिहासिक गौरवगाथा

(पिछले अंक में हमने देखा कि सवचंद सेठ के जहाज़ वापस नहीं आने की वजह से लोगों ने उनसे पैसे माँगना शुरू कर दिया। जब तक खुद के पास पैसे थे तब तक तो दिए लेकिन जब ठकुर ने अपने एक लाख रुपये माँगे, तब इतने पैसे नहीं होने की वजह से उन्होंने भारी हृदय से अहमदाबाद में रहनेवाले सोमचंद सेठ के नाम हुंडी लिख दी। लिखते-लिखते उनकी आँखों से आँसू निकल गए और दो बूंद हुंडी पर गिर गई। सोमचंद सेठ उन्हें नहीं पहचानते थे, न ही उनके खाते में उनका नाम था लेकिन हुंडी पर गिरी दो बूंदें देखकर उन्होंने ठकुर को एक लाख रुपये चुका दिए। अब आगे पढ़ेंगे...)

सेठ सोमचंद के मन में बहुत शांति हो गई। अपने ही धर्म के किसी स्वाभिमानी भाई ने दुःखी होकर हुंडी लिखी है। यदि ऐसे दुःखी भाई के दुःख में काम नहीं आऊँगा तो मेरा यह जन्म किस काम का? वे मन ही मन बहुत खुश हुए।

ठकुर ने सवचंद सेठ से हुंडी के रुपये मिल जाने की बात कही। सवचंद सेठ सोचने लगे, "वास्तव में तो भगवान ने मेरी लाज रख ली।" सोमचंद सेठ के दिल में प्रभु विराजमान हो गए। न पता, न ठिकाना, फिर भी स्वाभिमानी भाई की हुंडी स्वीकार कर ली और रुपये दे दिए।

इस तरफ सवचंद सेठ के जहाज़ जो भयंकर तूफान की वजह से एक टापू के पास रुक गए थे, वे तूफान कम होते ही वंथली की तरफ आ रहे हैं ऐसे समाचार मिले, और कुछ ही दिनों में सभी जहाज़ माल लेकर सही सलामत वापस वंथली आ गए।

सवचंद सेठ ने माल बेचकर पैसे कमा लिए और ठाकुर को साथ लेकर सोमचंद सेठ के पैसे चुकाने अहमदाबाद पहुँचे।

सोमचंद सेठ की पीढ़ी पर आकर सवचंद सेठ ने "जय जिनेन्द्र" करके हुंडी की बात शुरू की।

सोमचंद सेठ ने मुनीम से पूछा, "भाई देखो न, सवचंद सेठ के खाते में कोई रकम है?"

मुनीम ने कहा, "हाँ, एक लाख रुपये दिए थे। ब्याज के साथ गिनकर बताता हूँ। लेकिन किसी के खाते में नहीं लिखे हैं। खर्च के खाते में लिखकर दिए हैं।"

"तो सवचंद सेठ वंथलीवाले के खाते में कोई रकम नहीं है न?" सेठ ने पूछा।

मुनीम ने कहा : नहीं, उनके खाते में नहीं है।

सेठ ने कहा, "मुनीम जी, मुझे अच्छी तरह पता है, यह हुंडी मैंने खरीदी थी। इसके ऊपर एक इंसान के दो आँसू गिरे थे, ये दोनों आँसू मैंने एक-एक लाख में यानी दो लाख में खरीदे हैं। एक लाख दे दिए हैं। दूसरे एक लाख देना बाकी है।" फिर सवचंद सेठ की तरफ घूमकर कहा, "सेठ, हमारा कोई लेना आपके पास निकलता नहीं है, हम जैन श्रावक है। बिना हक़ के पैसे हम नहीं ले सकते।"

सवचंद सेठ तो यह बात सुनकर अवाक् रह गए। उन्होंने गदगद कंठ से कहा, "सेठ! यह क्या कह रहे हो! यह पैसे मैं आपको दिखाने के लिए नहीं लाया हूँ। यदि मैं यह वापस ले जाऊँगा तो मुझ पर चार हत्या का पाप लगेगा।"

बात बढ़ गई। दोनों दृढ़ थे। कोई पैसे रखने तैयार नहीं। पास में खड़े ठाकुर को तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, वे मन ही मन कहने लगे, "वाह बनिया वाह!"

अंत में दोनों ने संधि की, "गाँव के महाजन को बुलाएँगे और वे जो न्याय करेंगे वह दोनों को मानना होगा।"

"सेठ, हमारा कोई लेना आपके पास निकलता नही है, हम जैन श्रावक है। बिना हक़ के पैसे हम नही ले सकते।"

दूसरे दिन महाजन इकट्ठे हुए। दोनों ने अपनी बात पेश की। सवचंद सेठ ने साक्षी के तौर पर ठाकुर को रखा।

महाजन ने हर तरह से विचार करके फैसला सुनाया कि यह पैसे एक लाख, सोमचंद सेठ के और सवा लाख, सवचंद सेठ के धार्मिक काम के उपयोग में लेने हैं। शेत्रुंजय संघ ले जाकर शेत्रुंजय पहाड़ी पर एक छोटा मंदिर बनाया जाएगा।

बेंड-बाजे के साथ संघ अहमदाबाद से शेत्रुंजय आया। दर्शन-पूजा करके दोनों सेठ ने पहाड़ी पर ठीक जगह तय करके एक टूंक बंधवाई। जो आज भी सवा-सोमा की टूंक के नाम से प्रसिद्ध है।

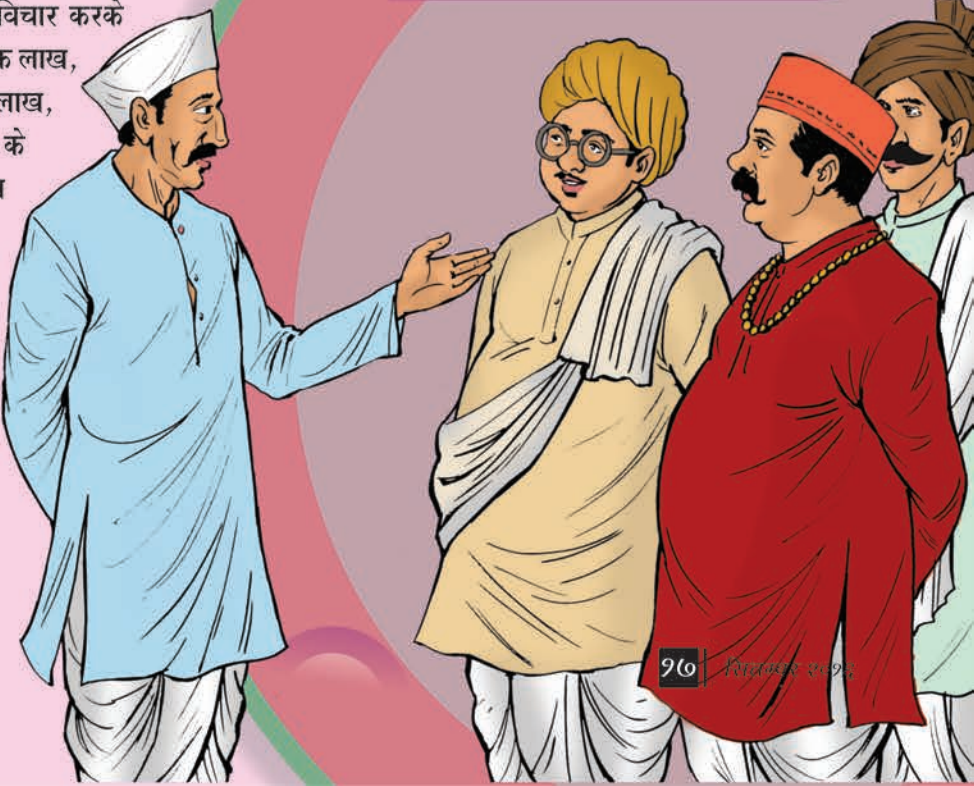

मीठी यादें

बहुत सालों पहले की बात हैं। दादा की जन्मजयंति का अवसर था और सभी महात्माओं के लिए दर्शन का प्रोग्रैम रखा गया था। जिसमें लगभग १२०० जितने महात्मा आए होंगे। उन दिनों जब सभी दर्शन के लिए जाते तब फूल-हार लेकर जाते और नीरू माँ को हार पहनाते, फिर उनके पैर छूकर विधि करते, विधि पूरी होने के बाद नीरू माँ वही हार निकालकर उन्हें पहनाते। उसके बाद दूसरे महात्मा का नंबर आता, यह सब करने में लगभग ४-५ मिनट लग जाते।

तब यहाँ पर लाइन में अचानक ही धक्का-मुक्की शुरू हो गई। सभी को यही लग रहा था कि, "मुझे पहले जाना है।" इतनी धक्का-मुक्की की वजह से स्थिति ऐसी हो गई कि कुछ बुजुर्ग महात्मा या तो गिर जाते या पैरों तले कुचले जाते। जो महात्मा लाइन मैनेज कर रहे थे, उन सभी ने भी उनको लाइन में आने की रिक्वैस्ट की लेकिन कोई उनकी सुने तब न। अंत में उन्होंने माइक में सूचना दी, "प्लीज़, आप सब लाइन में ही आइए। सभी को दर्शन करने का मौका मिलेगा लेकिन यदि आप इस तरह से धक्का-मुक्की करोगे तो हमें दर्शन बंद करवाने पड़ेंगे।"

कुछ देर में सबकुछ अपने आप ही सेट हो गया। उस दिन शाम को जब सभी सेवार्थी नीरू माँ के पास बैठे थे, तब नीरू माँ ने लाइन मैनेज करनेवाले महात्मा को इशारा करते हुए कहा कि, "क्या आपको पता है कि आपने क्या किया है?"

उस भाई की समझ में कुछ नहीं आया।

नीरू माँ ने उन्हें समझाते हुए कहा कि, "दादा का नियम है कि इस सत्संग के लिए या सत्संग की किसी भी प्रवृति के लिए कोई भी प्रकार का नेगेटीव कभी नहीं होना चाहिए। आप यह कैसे कह सकते हो कि मैं दर्शन बंद करवा दूँगा!, हमने आज तक ऐसा कभी नहीं कहा है कि यह दर्शन बंद हो जाएँगे या सत्संग बंद कर देंगे तो फिर आप ऐसा कैसे कह सकते हो? यह कैसा अहंकार है?"

फिर उन्होंने दादा की बात करते हुए कहा कि, "एक बार, कच्छ में ज्ञानविधि का आयोजन था लेकिन अचानक ही दादा की तबियत बिगड़ जाने की वजह से ऐसा लग रहा था कि शायद ज्ञानविधि नहीं हो पाएगी, तब दादा ने कहा था कि, मैंने एक बार प्रोमिस किया है कि ज्ञानविधि होगी इसलिए वह होकर ही रहेगी।"

नीरू माँ ने उस भाई को जैसे अल्टीमेटम दे रहे हो उस तरह से नीरू माँ ने कहा कि, "यह दादा का सिद्धांत है, आज के बाद कभी भी सत्संग या दर्शन के लिए ऐसा मत करना। चाहे कुछ भी हो, कोई भी संयोग खड़ा हो, या कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन अगर सत्संग डिक्लेर हुआ हो तो सत्संग होगा ही, दर्शन तय हुए हों तो दर्शन होंगे ही। इसके बाद ऐसा कभी नहीं होना चाहिए।"

यह सुनकर वह महात्मा तो नीरू माँ के चरणों में झुक गए।

जन्माष्टमी पर अडालज में पूज्य श्री के सानिध्य में श्री कृष्ण जनमोत्सव मनाया गया

नाटक

रास

डान्स

मटकी फोड़

पपेट शो

कृष्ण जन्म

पज़ल के जवाब

१. [illegible]

२. २४

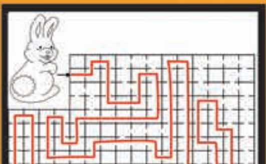

Akram Express
September 2016
Year : 4, Issue : 6
Conti. Issue No.: 42

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

स्वामी विवेकानंद हमेशा कहते...
यदि हम किसी के साथ हमारे एक रुपये का लेन-देन करेंगे तो हम दोनों के पास एक रुपया ही रहेगा।
लेकिन...
यदि हम किसी के साथ एक अच्छे विचार की लेन-देन करेंगे तो हम दोनों के पास दो अच्छे विचार होंगे।
याद रखना...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published